पाठ 5: नागार्जुन (यह दंतुरित मुसकान, फसल)

1. कवि परिचय (Author Introduction)

- **कवि का नाम:** नागार्जुन (जन-कवि के रूप में प्रसिद्ध)। असली नाम 'वैद्यनाथ मिश्र' था।
- **प्रमुख रचनाएँ:** युगधारा, सतरंगे पंखों वाली, हज़ार-हज़ार बाँहों वाली।
- **विशेषता:** नागार्जुन ने यथार्थवाद और आम जनजीवन की समस्याओं को अपनी कविताओं का विषय बनाया।

2. पाठ का प्रसंग (Context of the Chapter)

यह दंतुरित मुसकान: इस कविता में एक छोटे शिशु (जिसके अभी-अभी नए दाँत आए हैं) की निश्छल और मनमोहक मुसकान का वर्णन है, जो कठोर से कठोर व्यक्ति को भी पिघला सकती है।
फसल: इस कविता में कवि ने बताया है कि 'फसल' वास्तव में क्या है और किन तत्त्वों के सहयोग से इसका निर्माण होता है।

Scholrbit

3. विस्तृत सारांश (Detailed Summary)

यह दंतुरित मुसकान

कवि जब एक छोटे बच्चे की 'दंतुरित' (नए दाँतों वाली) मुसकान को देखता है, तो उसे लगता है कि यह मुसकान किसी मृतक (निराश व्यक्ति) में भी जान डाल सकती है। धूल से सना हुआ बच्चा कवि को ऐसा लगता है मानो कमल तालाब को छोड़कर उसकी गरीब झोपड़ी में आकर खिल गया हो। बच्चे का स्पर्श इतना जादुई है कि उसे छूते ही कठोर पत्थर पिघलकर जल बन जाए और बाँस या बबूल के पेड़ से भी कोमल शेफालिका के फूल झड़ने लगें। बच्चे की यह मुसकान पूरी तरह से स्वार्थरहित और निश्छल है।

फसल

कवि के अनुसार, फसल किसी एक व्यक्ति या एक तत्त्व का परिणाम नहीं है। फसल वास्तव में नदियों के पानी का जादू है जो सिंचाई के काम आता है। यह लाखों-करोड़ों किसानों और मज़दूरों के हाथों की मेहनत (स्पर्श की गरिमा) का फल है। यह भूरी-काली-संदली मिट्टी के गुणधर्मों का रूप है। इसके अलावा, फसल सूरज की किरणों का परिवर्तित रूप (रूपांतर) है जिससे पौधे भोजन बनाते हैं, और हवा की थिरकन (हवा के झोंकों) का सिमटा हुआ रूप है जो फसल को बड़ा करती है।

4. काव्यगत एवं साहित्यिक विशेषताएँ

- **भाषा:** सहज और प्रवाहमयी **खड़ी बोली**।
- **रस:** 'यह दंतुरित मुसकान' में **वात्सल्य रस** (शिशु के प्रति प्रेम) का उत्कृष्ट उदाहरण है।
- **अलंकार:**
  - **अतिशयोक्ति:** 'मृतक में भी डाल देगी जान'।
  - **उत्प्रेक्षा / रूपक बिंब:** 'झोपड़ी में खिल रहे जलजात'।

5. पाठ का मूल भाव / संदेश (Central Theme)

यह दंतुरित मुसकान: बच्चों की निश्छल और पवित्र मुसकान जीवन में आशा, उत्साह और प्रेम का संचार करती है। यह नीरस जीवन को भी सुंदर बना देती है।
फसल: मानव के परिश्रम (किसानों की मेहनत) और प्रकृति (हवा, पानी, धूप, मिट्टी) के आपसी सहयोग से ही नव-निर्माण (फसल) संभव है। मनुष्य और प्रकृति एक-दूसरे के पूरक हैं।

6. महत्त्वपूर्ण बिंदु (Key Points for Exam)

- **जलजात:** कमल का फूल। धूल से सना शिशु कमल के समान पवित्र लगता है।
- **शेफालिका के फूल:** अत्यंत कोमल फूल। शिशु के स्पर्श से कठोर व्यक्ति (बाँस/बबूल) भी भावुक हो जाता है।
- **फसल के आवश्यक तत्त्व:** नदियों का जल, किसानों की मेहनत, मिट्टी का गुणधर्म, सूरज की ऊष्मा, हवा की थिरकन।

Schorbit